JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कश्मीर की मुख्य नृत्य कलाएं

Research Scholar: Iqbal Hussain Mir
Deptt. of Music, Punjabi University Patiala
Mobile: 7889389002, 8803227773
Mail: mir.iqbalhussain@gmail.com

प्रस्तावना

कश्मीर के लोक नृत्यों मै हाफ़िज़ नगमा, बच्च नगमा, रोफ और हक्कट सबसे मशहूर नृत्य हैं। इन नृत्यों के साथ गाये जाने वाले गीतों में हमुद, नात, मंकब्बत या हल्के–फुल्के प्रेम गीतों का प्रयोग होता है। यह नृत्य कश्मीर के परम्परागत क्षेत्रीय वस्त्र पहनकर किऐ जाते हैं पर अब समय के साथ–साथ इनमें कुछ परिवर्तन देखने को मिलते हैं जिनमें कुछ स्वीकारित और कुछ अस्वीकारित तत्व हैं पर यह सत्य है कि इन नृत्यों को देखते ही व्यक्ति के अंदर हर समय एक अनोखा जज़्बा, हिम्मत और चारों तरफ़ खुशी ही खुशी सी महसूस होती है। यह नृत्य कलाएं कुछ दशकों पहले तक घर–घर, गली–गली में देखने को मिलती थीं लेकिन अब यह नृत्य कलाएं अपना अस्तित्व खो रही हैं और धीरे–धीरे लुप्त होती जा रही हैं।

परिचय

कश्मीरी संगीत में नृत्य परम्परा के शुरूआती दौर का अंदाज़ा लगाना बहुत मुश्किल है लेकिन इतिहास के पन्नों से हमें यह पता चलता है कि एक दौर में कश्मीर देव–दासियों का गढ़ रहा है। जिसका सबूत आज भी उन प्राचीन काल के मंदिरों के पत्थरों की दीवारों पर देखने को मिलता है। इन दीवारों पर आज भी चित्रित नृत्य की वह तस्वीरें मौजूद हैं जो कभी प्राचीन काल में देव–दासियों द्वारा कश्मीर की धरती पर हुआ करता था।

दसवीं शताब्दी में यहां ''कौशलवती'' नाम की एक नर्तकी हुई है जिसका वर्णन अकसर पुस्तकों में मिलता है। इसके साथ–साथ तारावती, वनमाला, दीपमाला, नृपमाला आदि कई और मशहूर नर्तकियों के होने की गवाही भी मिलती है। ये वह दौर था जब नृत्य केवल भक्ति भावना से भरा रहता था और गीतों की रचनाएं भी भक्ति भाव की होती थीं पर समय के साथ–साथ इस पवित्र कला को आगे चलकर कई मुश्किल दौरों के उतार–चढ़ाव से गुज़रना पड़ा क्योंकि राजा हर्ष" (1089-1101) के दौरे हुकूमत से लेकर सुल्तान सिकंदर (1394-1413) जिसको बुत–षिकन के नाम से भी जाना जाता था, के दौरे हुकूमत तक लगभग सभी राजाओं के आपसी लड़ाई–झगड़ों और तनाव के कारण कश्मीर में जंगी हालात बने रहे, जिसके कारण कई संगीतकार या तो दूसरे शहरों की तरफ़ चल पड़े या खामोश होकर बैठ गये जिसकी वजह से संगीत इस दौर में बहुत प्रभावित रहा और गुमनाम होकर कोई विशेष सफलता प्राप्त न कर सका पर एक लंबे अंतराल के बाद जब कश्मीर के हालात सुधरने लगे और कश्मीर में इस्लामी हुकूमत का दौर शुरू हुआ तो संगीत वापस

अपनी सफलता की मंज़िल की तरफ़ चल पड़ा क्योंकि इस दौर के सुल्तान ने संगीत को बहुत सराहा और संगीत की सभाओं का आरंभ किया, साथ ही संगीतकारों को वज़ीफ़ा देना भी शुरू किया। यह दौर उस महान सुल्तान ''सुल्तान ज़ैनुल आबदीन'' (1420.1470) का था जिस ने लोगों की तामीरो–तरक्की के साथ–साथ ही संगीत का भी प्रचार–प्रसार किया। उन्हें संगीत से बहुत लगाव था और सूफ़ी आलिम होने के साथ–साथ संगीत के अच्छे विद्वान और कलाकार थे। उनका कहना था :

> ''संगीत एक ऐसी जादूई ताकत है जिससे सूखे पेड़ पौधे दोबारा ज़िंदगी की बहार पाकर हरे भरे हो जाते हैं। दुख हो या सुख ये हमेशा इंसान को राहत और खुशी बख़्शता है। काश कि यह संगीत हमेशा मेरे साथ रहता।''[1]

सुल्तान ज़ैनुल आबदीन की मेहनत व लगन द्वारा संगीत को दोबारा कश्मीर में उच्च स्थान प्राप्त हुआ पर अब यह वह संगीत न था जो कभी पहले देवी देवताओं की प्रसन्नता के लिए हुआ करता था बल्कि इसने एक नया ही मोड़ ले लिया और यह सूफ़ी संतों के रंग में रंगा वह संगीत था जिसे ''सूफ़ियाना मौसीकी'' (सूफ़ी संगीत) के नाम से जाना जाने लगा। सूफ़ियाना मौसीकी की यह विशेषता थी कि इसमें केवल सूफ़ी संतों की लिखी रचनाएँ गाई जाती थीं जो कि एक नए रंग में रंगे ''इश्क–ए–हकीकी'' (परमात्मा से जुड़ा प्रेम) वास्तविकता और पवित्रता से संपूर्ण होती थी। आरंभ में केवल बड़े–बड़े फ़ारसी सूफ़ी संत रचनाकारों जैसे हाफ़िज़ शीराज़ी, मौलाना रूमी, मौलाना जामी, अमीर खुसरो, शेख़ शीराज़ी आदि की फ़ारसी भाषा में रची सूफ़ी रचनाएँ इस संगीत का ज़ेवर बनती रहीं लेकिन सदियों पश्चात कश्मीरी भाषा के सूफ़ी रचनाकारों की भी रचनाएँ गाई जाने लगीं। इस संगीत में रूहानियत (Spirituality) कूट–कूट कर भरी है जिसको सुनने से श्रोता अपनी सुध–बुध खोकर परमात्मा के नज़दीक पहुँच जाते हैं और मोक्ष प्राप्त करते हैं। सूफ़ियाना मौसीकी ने ईरानी परम्परागत संगीत और कश्मीरी लोक संगीत के मिलाप से जन्म लिया और एक नयी पहचान बनाकर कश्मीरी संगीत का ताज बन गया जिसमें कई शास्त्री नियमों का पालन होने के कारण से यह नियमबद्ध कश्मीरी सूफ़ियाना मौसीकी बन गया जो कि आधुनिक काल में 'Classical Music of Kashmir' के नाम से भी जाना जाता है। इस सूफ़ियाना मौसीकी के साथ एक मुख्य प्रकार का सूफ़ी नृत्य हुआ करता था जिसे ''हाफ़िज़ नगमा'' कहा जाता था।

हाफिज़ नगमा

''हाफ़िज़ा'' यानी एक स्त्री जिसे अनगिनत सूफ़ी गीत याद हों, 'नगमा' यानी गीत। इस प्रकार हाफ़िज़ नगमा का अर्थ है गायन के साथ–साथ सूफ़ी नृत्य करती स्त्री । हाफ़िज़ा, नृत्य के समय एक लम्बे से चोगे (Gown) के साथ इलाकाई वस्त्र और श्रृंगार किए हुए वाद्यों के मीठे–मीठे सुरों के साथ अपनी मधुर आवाज़ का जादू बिखेर कर गीत के शब्दों के अनुसार अपने चेहरे, हाथों और शरीर की हरकतों से शब्दों के भाव को व्यक्त करती है और कभी–कभी थिरकती हुई लय के अनुसार शरीर के अंगों की नाज़ुक सी हरकत के साथ आहिस्ता–आहिस्ता खड़ी हो जाती है और ताल के अनुसार कुछ कदम झूम कर वापिस अपनी जगह पर आकर दोबारा गाना शुरू करती है। हाफ़िज़ नगमा के साथ बजने वाले वाद्य संतूर, साज़–ए–कश्मीर, सहतार, वसूल या तबला होते हैं।

हाफ़िज़ नगमा आरंभ में केवल सूफ़ी स्थानों पर हुआ करता था और यह परमात्मा की उपासना का माध्यम माना जाता था लेकिन धीरे–धीरे कई राजाओं और महाराजाओं ने इसकी अहमियत को न समझकर इसे अपने दरबारों की चार

[1] मोहमद अहमद इन्द्राबी, सूफ़ियाना मौसीकी और कशमीर, पृष्ठ 263

दीवारियों में लाकर सूफ़ी स्थान से गिरादिया और इस में कई बुराईयां आने लगीं, जिसके बाद सन् 1934 में महाराजा प्रताभ सिंह ने इस कला पर रोकथाम के सख्त आदेश दिये जिसके फलस्वरूप यह कला (नृत्य) धीरे–धीरे खत्म होने लगी। हाफ़िज़ नगमा के खत्म होने के साथ–साथ ही जो नृत्य प्रचार में आया उसे ''बच्च नगमा'' कहते हैं।

बच्च नगमा

बच्च यानी छोटा बालक और नगमा यानी गीत । अफ़गानिस्तानी नृत्य के आधार पर इस बच्च नगमा को विशेष रूप से केवल बालक वर्ग प्रदर्शित करते हैं और इसका मुख्य मकसद केवल लोगों का मनोरंजन करना है। कम उर्म के छोटे बच्चों को ही गाने के साथ–साथ नृत्य सिखाया जाता है और सिखलाई के पश्चात यही बालक 'बच्चकोट'(कम उम्र का गुणी बालक) कहलाता है। बच्चकोट का वस्त्र काफ़ी हद तक कत्थक के ''अंगरख्खा'' के समान होता है और इसे ''पेशवाज़ा'' कहते हैं।

नृत्य के आरंभ में वाद्य धुन के मीठे स्वरों के साथ नर्तक (बच्चकोट) श्रोताओं को सलाम पेश करता है और साथ ही साथ धुन बदल जाती है और नर्तक पहले विलंबित फिर मध्य और अंत में ध्रुत लय में घुंघरू बंधे पैरों की विभिन्न पेशकारियां देकर अपनी कला का प्रदर्शन करता है। कभी–कभी नर्तक बैठे–बैठे ही स्त्रियों की आम घरेलू ज़िदंगी को नृत्य द्वारा दर्शाता है। उदाहरण के लिए बालों में कंघा करना, काजल लगाना, आटा गूंधना, चरखा कातना, रोटी बनाना आदि के भाव को व्यक्त करता है और इस दौरान वाद्यों पर कोई मशहूर धुन बज रही होती है। बच्च नगमा अधिकतर विवाह आदि खुशी के अवसरों पर प्रदिर्शत किया जाता है इसलिए इस नृत्य से हर उम्र के श्रोता मनोरंजन का लाभ उठाते हैं। इसी प्रकार खुशी के अवसरों पर किया जाने वाला एक नृत्य और भी है जिसे ''रोफ'' कहते हैं।

रोफ

कश्मीर के लोक नृत्यों में 'रोफ' सबसे मशहूर नृत्य है। यह स्त्रियों का नृत्य है और इसमें किसी भी वाद्य का प्रयोग नहीं होता है और इसके लिए किसी सिखलाई की भी कोई ज़रूरत नहीं होती, यह नृत्य अधिकतर ईद या विवाह आदि के अवसरों पर किया जाता है। इसमें भाग लेने वाली स्त्रियां दो कतारों में आमने सामने खड़ी हो जाती हैं। हर एक कतार में सात या आठ स्त्रियाँ अपनी दोनों बाँहें फैलाकर अपने दायें और बायें की स्त्रियों की कमर पर हाथ रखकर किसी प्रचलित धुन पर आधारित गीत को, पहले एक कतार की स्त्रियाँ गाना आरंभ करती हैं और फिर दूसरी कतार की स्त्रियाँ इसी ढंग से वापिस दोहराती हैं। गाना आरंभ करने के साथ ही दोनों कतारों की स्त्रियाँ लय के अनुसार अपने दोनों पैर अपनी स्थिर जगह से एक–एक करके पहले एक कदम आगे और फिर एक कदम पीछे ले जाकर अगले पैर को हवा में हल्का सा आगे–पीछे हिलाती रहती हैं जो कि इस नृत्य की विशेषता के साथ–साथ बहुत ही खूबसूरत लगता है, रोफ नृत्य के साथ गाये जाने वाले गीतों में हमुद, नात, मंकब्बत या हल्के–फुल्के प्रेम गीतों का प्रयोग होता है। यह नृत्य कश्मीर का परम्परागत क्षेत्रीय वस्त्र पहनकर किया जाता है जिसमें झुमके, हार, दुपट्टा, झूमर, फेरन (लम्बा कोट जैसा) जो कि रेश्म की कढ़ाई से सजा हुआ होता है आदि शामिल हैं पर अब समय के साथ–साथ इसमें कुछ परिवर्तन देखने को मिलते हैं जिनमें कुछ स्वीकारित और कुछ अस्वीकारित तत्व हैं पर यह सत्य है कि इस नृत्य को देखते ही व्यक्ति के अंदर हर

समय एक अनोखा जज़्बा, हिम्मत और चारों तरफ़ खुशी ही खुशी सी महसूस होती है। रोफ के अंत में एक नृत्य और होता है जिसे ''हक्कट'' कहते हैं।

हक्कट

हक्कट वास्तव में कम उम्र की लड़कियों का खेल है जिसमें दो लड़कियां ''हकचि बाथ'' (एक विशेष प्रकार का गीत) गाती हैं और एक दूसरे के हाथों पर हाथ मारकर विलंबित लय से झूमती हैं। गाना खत्म होते ही दो–दो लड़कियां एक दम से एक दूसरे की तरफ़ मुँह करके दाहिने हाथ से दाँया हाथ और बायें हाथ से बाँया हाथ पकड़कर ''पंजाबी किकली'' नृत्य की तरह पैरों के पंजों को स्थिर रखकर पैरों को खिसकाते हुए गोल–गोल चक्कर लगाना शुरू करती हैं और इस बीच वह गीत की आखरी पंक्ति को दोहराती रहती हैं और गोल चक्कर की गति को धीरे–धीरे बढ़ाती हैं जो कि देखने योग्य होता है।

हक्कट नृत्य कला अपना एक अलग विशेष स्थान रखती है पर इसके बावजूद भी हक्कट अब रोफ का एक मुख्य अंग बन गया है जिसके कारण हक्कट का यही तेज़ लय वाला भाग जहां से लड़कियां एक दूसरे का हाथ पकड़कर तेज़ गति से गोल चक्कर लगाना शुरू करती हैं, को रोफ नृत्य के अन्त में जोड़ा जाता है जिसके पश्चात रोफ की समाप्ति की जाती है।

निष्कर्ष

उपरोक्त वर्णित नृत्य कलाएं कुछ दशकों पहले तक घर–घर, गली–गली में देखने को मिलती थीं लेकिन अब यह नृत्य कलाएं अपना अस्तित्व खो रही हैं और धीरे–धीरे लुप्त होती जा रही हैं। क्योंकि पष्चिमी स्भ्यता का प्रभाव हमारी हर कला के क्षेत्र पर हावी हो रहा है और हम अपनी असल सभ्यता से दूर होते जा रहे हैं। इसलिए ज़रूरत है कि हम अपनी परम्परा की तरफ़ ध्यान देकर इसके प्रचार–प्रसार के साथ–साथ इसे महफ़ूज़ करें ताकि हमारी आने वाली नस्लें अपनी सभ्यता और इतिहास को जान सकें।

Reference books

1. Dr Afroza- A study of Kashmiri Folk Music
2. Kalhan- Rajtarangni
3. M.L, Kapur- The History of Medival Kashmir
4. Missing Name- Soan Adab
5. Mohd. Ishaq khan- Kashmiri Transition to Islam
6. Mohd. Ahmad Indrabi- Sufiana Mosique aur Kashmir
7. Mohd. Khokar- Dances of India
8. Mohd. Sultan Bhagat Luka Theatre
9. Noor Mohd. Bhat- Sufiana Mosique
10. S.N, Dhar- Jammu and Kashmir Folklore
11. Shaikh Ab. Aziz- Koshur Sargam
12. Syed Qaisar Qalander- Hamari Mosique